बिहार विधान-सभा वादवृत्त ।

(भाग १--कार्यवाही--प्रश्नोत्तर ।)

मंगलवार, तिथि ६ सितम्बर, १९६६ ।

विषय-सूची ।

	पृष्ठ ।
प्रश्नों के लिखित उत्तर --	
प्रश्नों के लिखित उत्तरों का सभा की मेज पर रखा जाना	१
प्रश्नों के मौखिक उत्तर --	
तारांकित प्रश्न संख्या ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११ एवं १२--५५ ..	१--५६
अतारांकित प्रश्न संख्या ३	५६-५७
परिशिष्ट (प्रश्नों के लिखित उत्तर)	५८--८९
दैनिक निबन्ध	९१-९३

टिप्पणी--जिन मंत्रियों एवं सदस्यों ने अपना भाषण संशोधित नहीं किया है उनके नाम के आगे ऐसा (*) चिह्न लगा दिया गया है

(२) यदि खंड (१) का उत्तर स्वीकारात्मक है तो उक्त महंगाई-भत्ते की चुकती करने के संबंध में सरकार कौन-सा कदम उठाना चाहती है ?

श्री सत्येन्द्र नारायण सिंह—(१) उत्तर अंशतः स्वीकारात्मक है । १ मार्च, १९६२ से ३१ अगस्त, १९६२ तक के महंगाई-भत्ते का भुगतान हो चुका है । १ सितम्बर, १९६२ से २८ फरवरी, १९६३ तक के महंगी भत्ते का भुगतान इसलिये नहीं किया जा सका था कि विद्यालय की प्रस्वीकृति, स्वीकृति की शर्तों को पूरा नहीं करने के कारण निलम्बित हो चुकी है ।

(२) विद्यालय को प्रस्वीकृति मिल चुकी है । अतः अब उसके बकाये अवधि की महंगी भत्ता भुगतान करने के लिये आवश्यक कार्रवाई की जा रही है ।

श्री दारोगा प्रसाद सिंह को दो वार्षिक वेतन-वृद्धि देना

३३ । श्री सूरज प्रसाद—क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि—

(१) क्या यह बात सही है कि शाहाबाद जिलान्तर्गत उच्च विद्यालय नवानगर के शिक्षक श्री दारोगा प्रसाद सिंह, एम० ए०, डीप० इन० एड० को ११ सितम्बर, १९६३ को अल्प-प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की परीक्षा पास करने के बावजूद भी अभी तक दो वार्षिक वेतन-वृद्धि नहीं दी गई है ;

(२) क्या यह बात सही है कि श्री दारोगा प्रसाद सिंह अक्तूबर, १९६४ में ही डीप० इन एड० की परीक्षा पास किए, लेकिन उन्हें अभी तक स्नातक का ही वेतनक्रम दिया जा रहा है ;

(३) क्या यह बात सही है कि उक्त स्कूल में लड़कों की संख्या को देखते हुए अवर-प्रमंडल शिक्षा पदाधिकारी, बक्सर ने अपने निरीक्षण प्रतिवेदन के पत्रांक ११२९, दिनांक १४ दिसम्बर, १९६३ के अनुसार एक प्रशिक्षित शिक्षक की नियुक्ति का सुझाव दिया था ;

(४) अगर उपरोक्त खंडों के उत्तर स्वीकारात्मक हैं, तो क्या सरकार उक्त शिक्षक को एम० ए०, डीप०-इन०-एड० का वेतन तथा दो वार्षिक वेतन-वृद्धि देने की विचार रखती है ; यदि नहीं तो क्यों ?

श्री सत्येन्द्र नारायण सिंह—(१) उत्तर आंशिक रूप से स्वीकारात्मक है । श्री दारोगा सिंह एक वेतन-वृद्धि पा रहे हैं एवं दूसरा वेतन वृद्धि जनवरी, १९६६ से ही देने का प्रस्ताव प्रबंध समिति पारित कर चुकी है । प्रबंध समिति की आगामी बैठक में गत बैठक की कार्यवाही की पुष्टि होते ही उन्हें दूसरा वेतन-वृद्धि भी मिलने लगेगा ।

(२) उत्तर स्वीकारात्मक है ।

(३) उत्तर स्वीकारात्मक है ।

(४) दो वेतन-वृद्धि के विषय में खंड (१) के उत्तर से स्थिति स्पष्ट हो जाती है । जहांतक प्रशिक्षित स्नातक का वेतनमान देने का प्रश्न है, आर्थिक कठिनाइयों के कारण विद्यालय अभी उसे देने में असमर्थ है ।